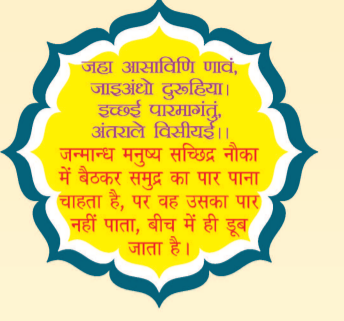




अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र



नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 12 • 25-31 दिसंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 23-12-2023 • पेज : 8

₹10 रुपये

अध्यात्म है राग-द्वेष का चिकित्सक : आचार्यश्री महाश्रमण

कालबादेवी, 9६ दिसंबर, २०२३

भगवान महावीर के सक्षम प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में सुख भी है, तो दुःख भी है। दुःख एक ऐसा तत्त्व है, जिसके कारण आदमी को अच्छी प्रेरणा भी प्राप्त हो सकती है। आदमी को संभलने का मौका भी मिल सकता है। कभी व्यक्ति में मोह के प्रभाव से संभलने की बात ओझल सी हो जाती है।

अध्यात्म का मंतव्य है कि शरीर और आत्मा दो चीजें हैं। जो हमें दिखाई देता है, वह स्थूल शरीर है। इस शरीर के अलावा दो शरीर और हैं सूक्ष्म और सूक्ष्मतर जैन दर्शन की भाषा में उनका नाम है—तेजस और कार्मण शरीर। कार्मण शरीर सारे दुखों का कारण बनता है। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं और दुखों का कारण है।

रोगों का इलाज तो हो सकता है, पर राग-द्वेष का इलाज होना मुश्किल है। पूर्वजन्म में किए गए कर्मों का वर्तमान में उदय आने पर कष्ट हो सकता है। शारीरिक कष्ट का संबंध हमारी चेतना



के साथ जुड़ा है। मृत्यु आने पर मोक्ष न होने तक आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है। जन्म-मरण के कारण यह राग-द्वेष हैं। राग-द्वेष को क्षीण कर दें तो दुःख का कारण दूर हो जाएगा।

राग-द्वेष की चिकित्सा अध्यात्म के द्वारा हो सकती है। ध्यान योग व संवर-निर्जरा से राग-द्वेष को दूर किया

जा सकता है। आध्यात्मिक चिकित्सा हेतु जीवन में ईमानदारी, अहिंसा, संयम एवं नशामुक्ति का समावेश होना चाहिए।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आयोजित Elevate : Say Yes To Life-No To Drugs के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा कि व्यक्ति ड्रग्स से बचने का प्रयास करे। शराब, गुटखा, ड्रग्स आदि

का नशा व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। मेडिकल साइंस से संबंधित व्यक्ति Prevention and Cure पर ध्यान दें और अध्यात्म से जुड़े व्यक्ति राग-द्वेष को दूर करने का प्रयास करें तो व्यक्ति का शारीरिक एवं भावनात्मक दोनों प्रकार का स्वास्थ्य अच्छा रह सकेगा।

कार्यक्रम संयोजक डॉ० गौतम

भंसाली, मुंबई के ज्वाइंट सी०पी० सत्यनारायण चौधरी, एलआईसी के चेयरमैन सिद्धार्थ मोहंती, लीवर स्पेशलिस्ट डॉ० फारूख उदवाड़िया, डॉ० एस०वी० खाडीकर (बोम्बे हॉस्पिटल, न्यूरो सर्जन), कमीशनर एमएमआरडीए संजय मुखर्जी, कमीशनर बीएमसी इकबाल चहर, मुख्य अतिथि चेयरमैन बोम्बे हॉस्पिटल बी०के० तापड़िया, अभिनेता सुनील सेठी, संगीतकार अनु मलिक, सुमति गोठी, अविनाश नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए।

अणुविभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अशोक कोठारी ने अणुविभा की ओर से सभी का आभार व्यक्त किया। आज का यह विशेष कार्यक्रम बोम्बे हॉस्पिटल के प्रांगण में हुआ। अणुविभा द्वारा Elevate पर डोक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

योग-ध्यान के प्रयोग से करें मन की चंचलता को दूर : आचार्यश्री महाश्रमण



कालबादेवी, 9८ दिसंबर, २०२३

कालबादेवी प्रवास के दूसरे दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन

में आत्मा तो मूल तत्त्व है। आत्मा के साथ तीन चीजें और हैं—शरीर, वाणी और मन। शरीर, वाणी और मन प्रवृत्ति-कार्य करने के साधन हैं। इन तीनों का जीवन में बहुत महत्त्व है।

मन हर प्राणी के पास नहीं हो सकता है। कुछ प्राणियों के पास होता है। हम मनन करें कि हमारे पास मन है, तो हम इसका बढ़िया उपयोग कैसे करें। मन के दो दुर्गुण भी हैं—मन की चंचलता और मन की अशुभ प्रवृत्ति। योग-ध्यान के प्रयोग से चंचलता को कम किया जा सकता है। मन को थोड़ा समझने का प्रयास करना चाहिए। तन की चंचलता को कम करने से मन की एकाग्रता बढ़ सकती है। अभ्यास के द्वारा चंचलता कम की जा सकती है।

मन की मलिनता को भी दूर करने का हम प्रयास करें। ज्यादा गुस्सा, अहंकार न आए, मन प्रसन्न रहे, ऐसा चिंतन करें। सकारात्मक सोच रखें,

नकारात्मकता से दूर रहें। हर स्थिति में हम प्रसन्न रहें, दुःखी न बनें, सुखी रहें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जीवन विज्ञान के संदर्भ में फरमाते थे कि कैसे विद्यार्थियों में भावों पर नियंत्रण रखने के साथ ज्ञान और संस्कार का विकास हो सकता है। ड्रग्स व नशे से विद्यार्थियों को संकल्पित होकर, बचने का प्रयास करना चाहिए। बुद्धि के साथ शुद्धि भी रहे। शिक्षक निर्माण करने वाले होते हैं, वे विशेष रूप से विद्यार्थियों को जागरूक करते रहें।

मन की निर्मलता का विकास होने से मन शांत रह सकता है। शिक्षण संस्थानों में ज्ञान और संस्कार के रूप में विद्यार्थियों का निर्माण किया जा सकता है। व्यक्ति योग-ध्यान द्वारा मन की चंचलता को कम

कर शुभ प्रवृत्ति में मन को रखने का प्रयास करें। आज महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे। इसी विद्यालय के विद्यार्थी बाल मुनि जयेश कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए पूज्यप्रवर की अभिवंदना की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप अध्यक्ष नितीश धाकड़, आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन से किशनलाल डागलिया, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुति दी गई। स्कूल के विद्यार्थी, स्कूल के चेयरमैन एस०के० जैन, वनिता मनसुखाणी, महक जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

दादर, १५ दिसंबर, २०२३

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दादर प्रवास के दूसरे दिन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मित्र होते हैं, मित्र बनाए भी जाते हैं। शास्त्र में कहा गया है कि पुरुष! तुम ही तुम्हारे मित्र हो। फिर बाहर के मित्र को क्यों खोज रहे हो।

निश्चय नय की बात है कि आत्मा स्वयं हमारी मित्र है। आत्मा मित्र भी बन सकती है, तो आत्मा शत्रु भी बन सकती है। जो आत्मा सत्-प्रवृत्ति में संलग्न है, सुप्रतिष्ठित और शुभ भावों में है, सदाचार में है, मानो वह आत्मा हमारी मित्र है। जो आत्मा दुष्प्रवृत्ति में संलग्न है वह आत्मा खुद ही शत्रु बन जाती है। दुरात्मा शत्रु है, सदात्मा मित्र बन सकती है। हम अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाएँ।

बाहर के मित्र भी बनते हैं, तो वहाँ भी आध्यात्मिक लाभ का प्रयास हो तो अच्छी बात हो सकती है। हम यह ध्यान दें कि कहीं मेरी आत्मा शत्रु तो नहीं बन रही है। हम धर्म, सदाचार और सन्मार्ग पर चलें।

हम जैन धर्म, जैन शासन से जुड़े हुए हैं। चौबीस तीर्थकरों को हमारा



नमस्कार है। जैन शासन में अनेक आचार्य और साधु हुए हैं, वर्तमान में भी हैं। श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं। भगवान महावीर का २५५०वाँ निर्वाण वर्ष चल रहा है।

भगवान महावीर की २५वीं निर्वाण शताब्दी भी दिल्ली में मनाई गई थी। एक जैन प्रतीक, एक जैन ध्वज और एक जैन ग्रंथ उस समय सामने आया था। जन्मना

जैन होना एक बात है, कर्मणा जैन होना विशेष बात है।

जैन जयतु शासनम्—जैन धर्म की जय हो। जैन धर्म के अनुयायियों के संस्कार अच्छे हों। उनका भोजन शुद्ध हो, वे नशामुक्त हों। जैन शासन के अनुयायी अच्छी साधना स्वयं करें एवं दूसरों को भी समझाएँ। गुरुदेव तुलसी के समय समण श्रेणी शुरू हुई थी, जो विदेशों

में जाकर जैन धर्म की, अध्यात्म-योग का प्रचार-प्रसार करती है। सबमें अहिंसा, संयम, ईमानदारी, नशामुक्ति व राग-द्वेष मुक्ति एवं कषाय मुक्ति की भावना रहे। यही मुक्ति का मार्ग है।

दिगंबर आचार्यश्री प्रमाणसागर जी ने कहा कि जैनम जयति शासनम् हृदय को छूने वाला विषय है। जो माँ बच्चे को णमोकार महामंत्र कानों में सुना देती है,

वो बच्चा जैन हो जाता है। णमोकार मंत्र सुनने वाला भगवान बने या न बने पर भाग्यवान अवश्य बन जाता है। जो सत्ता कर प्राप्त की जाए वो सत्ता होती है पर जो आत्मा को तपाकर प्राप्त किया जाता है, वो सत्य होता है।

महात्मा गांधी ने श्रीमद् राजचंद्र से भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धांत को अपनाकर हमारे देश को आजाद कराया था। संत के पीछे-पीछे चलने वाला व्यक्ति स्वयं एक दिन संत बन जाया करता है।

मंदिर तो बहुत हैं पर दर्शन करने वालों की संख्या कम है। अब हमें पत्थर को भगवान नहीं बनाना है, हर इंसान को भगवान बनाना है।

अनुशासन ही हमें आत्मा से परमात्मा बना सकता है। थोड़ा-सा राग भी निर्वाण में बाधक बन जाया करता है। भले हम किसी पंथ में विश्वास करें पर मूल में तो हम जैन हैं। हम जिनशासन की प्रभावना करते रहें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप, ज्ञानशाला एवं कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुक्ति की दिशा में प्रस्थान है अनासक्ति की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण



वरली, १६ दिसंबर, २०२३

वृहत्तर मुंबई प्रवास के अंतर्गत अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी दादर से विहार कर वरली पधारे। परम पावन आचार्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारा जीवन पदार्थों पर निर्भर करता है। अनेक पदार्थ हमारे

जीवन की आवश्यकताएँ हैं।

जीवन की प्रथम कोटि की आवश्यकताओं में है—हवा, पानी और भोजन। श्वास लेने के लिए हवा चाहिए। पीने को पानी चाहिए। धरती पर तीन रत्न हैं—पानी, अन्न और अच्छी वाणी। उसके बाद अपेक्षा होती है—रोटी, कपड़ा और मकान। पदार्थ जीवन

के लिए आवश्यक है, पर इनके प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए। न स्वाद में आसक्ति हो और न ही विवाद में।

आसक्ति दुःख का कारण है। आसक्ति बंधन है, अनासक्ति मोक्ष का मार्ग है। दुनिया में अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने राजपाट छोड़कर साधना तपस्या की थी, योगी बने थे। हम योगी न बन सकें तो कम से कम उपयोगी तो बनें। आदमी को आसक्ति से अनासक्ति की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

विश्वविद्यालय ज्ञान के माध्यम हैं, पर संत-महात्मा तो अध्यात्म का ज्ञान देते हैं। भारत में ग्रंथ, पंथ और संत संपदा है।

इनसे आदमी कल्याण में अग्रसर हो सकते हैं। ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को चरित्र-आचार का भी ज्ञान मिले।

ड्रस-नशे का बहुत बुरा परिणाम आ सकता है, यह भी विद्यार्थियों को समझाएँ। विद्यार्थी अज्ञान को दूर करें, मोह-आसक्ति मंद हो तो जीवन अच्छा हो सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सुरेंद्र चोरड़िया, दिलीप सरावगी, बी०सी० भालावत, एचएसएनसी यूनिवर्सिटी की प्रो० हेमलता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शुक्ल लेश्या में रहकर परिणामों को अच्छा रखने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण



बांद्रा ईस्ट, १३ दिसंबर, २०२३

पूज्यप्रवर आज प्रातः पाली हिल्स से खार होते हुए बांद्रा ईस्ट पधारे।

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि यह पुरुष अनेक चित्त वाला है। यह मन एक घोड़े की तरह है। यह मन कभी दुष्ट अश्व बन जाता है और उत्पथ की ओर दौड़ने लग जाता है। चित्त और मन अलग-अलग भी हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

साप्ताहिक जाप का आयोजन

विजयनगर।

मुनि दीप कुमार जी एवं सहवर्ती संत मुनि काव्य कुमार जी की प्रेरणा एवं सान्निध्य से तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की अभिवंदना में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' के साप्ताहिक जाप का आयोजन किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने आचार्य भिक्षु के गुणों का उल्लेख करते हुए गीत का संगान भी किया। मुनिश्री ने उपस्थित श्रावक समाज को 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' के जाप का धारणानुसार संकल्प करवाया।

मुनि काव्य कुमार जी ने किशोर मंडल टीम द्वारा आध्यात्मिक कार्यों, विभिन्न सायंकालीन कार्यक्रमों के सफल आयोजन करने की सराहना की। किशोर मंडल द्वारा आयोजित इस जाप में तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरना, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री कमलेश चोपड़ा, तेरापंथी सभा सहमंत्री लाभोष कांसवा, किशोर मंडल संयोजक विशाल श्यामसुखा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। जाप संयोजक अरविंद पोरवाड़ एवं चेतन गांधी का सराहनीय श्रम रहा।

शुक्ल लेश्या में रहकर परिणामों को अच्छा ... (पृष्ठ २ का शेष)

जहाँ एक ओर चित्त को चेतना के लिए प्रयुक्त किया गया है जैसे सचित और अचित। कहीं चित्त को मन के संदर्भ में भी प्रस्तुत किया गया है। आदमी के चित्त की स्थितियाँ बदलती भी रहती है। भाव परिवर्तित हो जाते हैं। मन और भाव का भी संबंध होता है।

चित्त, मन, भाव और लेश्या का भी आपस में संबंध है। छः लेश्याएँ बताई गई हैं। सभी संसारी जीवों में लेश्याएँ होती हैं। मनुष्य में किसी-किसी को लेश्या रहित भी कहा गया है। केवलज्ञानी जो तेरहवें गुणस्थान में हैं, वे भी सलेश्य है। उनमें भी शुक्ल लेश्या होती है। परंतु केवली जब तेरहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान में जाते हैं, तब चौदहवें गुणस्थान में लेश्या नहीं होती है। वह अलेश्य अवस्था हो जाती है।

योग और लेश्या में बड़ा निकट का संबंध लगता है। जहाँ लेश्या है, वहाँ योग है। योग है, वहाँ लेश्या है इस तरह सहचरत्व दोनों में हैं। छठे गुणस्थान के प्राणियों में छहों लेश्याएँ हो सकती हैं। भावों का परिवर्तन भी होता रहता है। कृष्ण, नील, कापोत लेश्या के अशुभ परिणाम हैं। तेजस, पद्म और शुक्ल लेश्या के शुभ परिणाम होते हैं।

जैसी भावना होती है, वैसी सिद्धि होती है। कर्मों का बंध भावों पर टिका हुआ है। मनुष्य के मन के भाव ही बंध और मुक्ति के कारण हो सकते हैं। कई बार आदमी के ऊपर के भाव अलग होते हैं और भीतर के भाव अलग होते हैं।

हमारा शुक्ल लेश्या में रहना हो, अच्छे भाव, अच्छे परिणाम हो। वाणी में और भीतर में अंतर न हो, कथनी-करनी की एकरूपता रहे। छल-कपट न करें, सरलता में रहें। हम लेश्या को समझकर अपने परिणामों को अच्छा रखने का प्रयास करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सूर्य बिना याचना किए चारों ओर प्रकाश फैलाता है। बादल अमीर-गरीब को नहीं देखता है। चंद्रमा अपनी शीतलता चारों ओर फैलाता है, उसी तरह संत और सज्जन लोग परहित में अपना जीवन अर्पित कर देते हैं। दूसरों के कल्याण-हित के बारे में सोचते हैं। उनकी कथनी-करनी में फर्क नहीं होता है। हम गुरुदेव के जीवन को देखें, परमार्थ ही उनके जीवन का ध्येय बना हुआ है। जो दूसरों का हित चाहता है, उसका हित अपने आप सध जाता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना-स्वागत में बांद्रा सभा की ओर से मदनलाल चपलोट, जितेन्द्र परमार, मुकेश नवलखा, ज्ञानशाला, तेयुप अध्यक्ष महेश चपलोट ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत का संगान किया। तेरापंथ किशोर मंडल व तेरापंथ कन्या मंडल ने 'मेमोरी ऑफ मुंबई चातुर्मास' की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के अंत में तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टप्पू सेना के कलाकारों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि



नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

जोरावरपुरा निवासी, सूरत प्रवासी पंकज बुच्चा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

पवन बुच्चा ने पारिवारिकजनों व संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

पूर्वाचल-कोलकाता।

पूर्वाचल-कोलकाता प्रवासी दिलीप चोपड़ा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयराज बरमेचा एवं अनूप गंग ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक कार्यक्रम संपादित करवाया।

संस्कारकों ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया तथा चोपड़ा परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया। दिलीप चोपड़ा ने तेयुप एवं दोनों संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

विजयनगर।

ब्यावर निवासी, बेंगलोर प्रवासी णमो लोढ़ा एवं कनिका लोढ़ा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक कमलेश चोपड़ा एवं आशीष सिंधी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

लोढ़ा परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा लोढ़ा परिवार को मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पूर्वाचल-कोलकाता।

पूर्वाचल-कोलकाता प्रवासी कमलेश बैद के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक कार्यक्रम संपादित करवाया।

तेयुप की ओर से उमंग बैद ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया तथा आभार ज्ञापित किया।

सूरत।

छापर निवासी, सूरत प्रवासी नीरज नाहटा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

परिवारजनों ने सभी का आभार ज्ञापित किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

सूरत।

तालछपर निवासी, सूरत प्रवासी प्रमोद-बेलाजी भंसाली के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

प्रमोद भंसाली ने संस्कारकों एवं पधारें हुए सभी परिजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

पाणिग्रहण संस्कार

लाडनू।

लाडनू निवासी, सूरत प्रवासी स्व० विमल पगारिया के सुपुत्र गौरव पगारिया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार लाडनू निवासी बनारस प्रवासी छत्रसिंह जैन की सुपुत्री रीना जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा, सुशील डागा, राजेश बोहरा ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप लाडनू कोषाध्यक्ष सुमित मोदी की उपस्थिति रही। तेयुप की ओर से मंगल भावना पत्रक भेंट किया गया।

खारूपेटिया।

सरदारशहर निवासी, खारूपेटिया प्रवासी अजित एवं कल्पना बोथरा के पुत्र ऋषभ बोथरा एवं अंकिता चौधरी का विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक बाबूलाल सुराणा, जैन संस्कारक विधि के पूर्व राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन एवं अशोक बोरड़ ने संपादित करवाया।

सभा अध्यक्ष दीपक बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सरोज दुगड़ की उपस्थिति में तेयुप अध्यक्ष प्रकाश बोथरा एवं सचिव आशीष छाजेड़ ने मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

उपासना

(भाग - एक)

प्रस्तुति



दस धर्म

क्षमा

सिंधु-सौवीर के अधिपति उद्रायण ने उज्जयिनीपति चण्डप्रद्योत से क्षमा माँगी। एक था बंदी और दूसरा था बंदी बनाने वाला। एक था पराजित और दूसरा विजेता। उद्रायण ने कहा, 'महाराज प्रद्योत, आज संवत्सरी का दिन है। यह मैत्री का महान पर्व है। इस अवसर पर मैं तुम्हें हृदय से क्षमा करता हूँ। तुम मुझे हृदय से क्षमा करो।'।

महाराज प्रद्योत ने कहा, 'क्या कोई बंदी क्षमा दे सकता है?' उद्रायण आगे बढ़ा और प्रद्योत को मुक्त कर अपने बराबर बिठा लिया। दोनों हृदय स्नेह की शृंखला से बंध गए।

स्नेह का धागा अविच्छिन्न है। उसमें असंख्य दिलों को एक साथ बाँधने की क्षमता है।

उस दीप को बुझने में कितनी देर लगेगी, जिसमें स्नेह नहीं रहा है?

उस पुष्प को मुरझाने में कितनी देर लगेगी जिसमें रस नहीं रहा है?

स्नेह जीवन के हिमालय का वह प्रपात है, जो गंगा-यमुना बन बहता है और धरती के कण-कण को अभिषिक्त, अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित करता है।

स्नेह जीवन के सूर्य का वह प्रकाश है जो गहन अंधकार को भेदकर मानस की हर सतह को आलोक से भर देता है। जिसके जीवन की गहराई में स्नेह की सरिता प्रवाहित नहीं है, वह क्या क्षमा करेगा?

क्षमा का शब्दोच्चार क्षमा नहीं है। दुर्बलताओं तथा अल्पताओं को स्नेह की महान् धारा में विलीन करने की क्षमता जो है, वही क्षमा है। गंगा कितने गंदे नालों को अपने में मिला पवित्र बना लेती है। यह क्षमता किसी नाले की धारा में नहीं हो सकती। क्षमा का अर्थ है स्नेह की असीमता। इतनी असीमता कि जिसमें कोई भी भूल या कोई भी अपराध अपनी विशालता प्रदर्शित न कर सके। धर्म की आत्मा है स्नेह, प्रेम या मैत्री। जो सूखा है, वह कठोर है। कठोर और धार्मिकता अग्नि और जल की भाँति एक साथ नहीं रह सकती। जो चिकना है, वह कोमल है। कोमलता और अधार्मिकता अग्नि और जल की भाँति एक साथ नहीं रह सकती।

क्या उन धर्मों को धर्म कहा जा सकता है, जो मनुष्य को मनुष्य के प्रति कठोर बना रहे हैं, मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना रहे हैं, मनुष्य के प्रति मनुष्य के मन में घृणा भर रहे हैं और अपनी सुरक्षा या विस्तार के लिए मनुष्य से मनुष्य की बलि माँग रहे हैं। जो धर्म आत्मा की पवित्र वेदी से हटकर जातीय परंपरा को एक-रस हो जाता है, वह स्नेह के बदले रुक्षता की धार बहाता है और एकत्व के बदले विभाजन को बल देता है। ऐसे धर्मों से मनुष्य जाति बहुत त्रास पा चुकी है। अब उसे उसी धर्म की अपेक्षा है जिसके अंतस्तल में स्नेह और वातावरण में क्षमा का अजस्र स्रोत बह रहा है।

मुक्ति

इस दुनिया में बंधन बहुत हैं पर प्रेम-रज्जु जैसा गाढ़ बंधन कोई नहीं है। भौरा काठ को भेदकर निकल जाता है, किंतु कोमलतम कमल-कोष को भेदकर नहीं निकल पाता।

सूर्यविकासी कमल था। मध्याह्न में वह खिल उठा। एक भौरा आया और उसके पराग में लुब्ध हो गया। वह बार-बार उस पर मंडराता रहा। अंत में उसके मध्य में जाकर बैठ गया। संध्या हो गई, फिर भी वह नहीं उड़ा। कमल-कोष सिकुड़ गया और भौरा उसमें बंदी बन गया। प्रेम से कौन बंदी नहीं बना?

दूसरों के प्रति प्रेम होता है, वह बाँधता है और अपने पति प्रेम होता है, वह मुक्त करता है। बंधन का अर्थ है दूसरों की ओर प्रवाहित होने वाला प्रेम और मुक्ति का अर्थ है अपने अस्तित्व की ओर प्रवाहित होने वाला प्रेम। यह स्वार्थ की संकुचित सीमा नहीं है। यह व्यक्तित्व की सहज मर्यादा है। जिसे अपने अस्तित्व का अनुराग है, वह दूसरों को बंधन में नहीं डाल सकता। दूसरों को वे ही लोग बाँधते हैं, जो अपने अस्तित्व के प्रति उदासीन होते हैं। मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए तोते को पिंजड़े में डालता है। चिड़ियाघर की सृष्टि क्यों हुई? मनुष्य अपने में अनुरक्त नहीं है, इसलिए वह दूसरों को बंधन में डाल अपना मनोरंजन करता है।

एक आदमी की अपने पड़ोसी से अनबन हो गई। उसके मन में क्रोध की गाँठ घुल गई। वह जब कभी पड़ोसी को देखता, उसकी आँखें लाल हो उठतीं। यह द्वेष का बंधन है।

एक बुढ़िया शरीर में कृश होने लगी। पुत्र ने पूछा, 'माँ! क्या तुम्हें कोई व्याधि है?'

'नहीं बेटा! कोई व्याधि नहीं है।'

'फिर यह कृशता क्यों आ रही है?'

'बेटा! अपने पड़ोसी के घर में बिलोना होता है, उससे मुझे बहुत पीड़ा होती है। मथनी उस बिलोने में नहीं, मेरी छाती में चलती है। इसलिए मेरा शरीर कृश हो रहा है।' यह ईर्ष्या का बंधन है।

राजा ने कहा-बकरी को खूब खिलाओ पर शरीर में बढ़नी नहीं चाहिए। गाँव वाले समस्या में उलझ गए। रोहक ने मार्ग ढूँढ़ लिया। बकरी को शेर के पिंजड़े के पास ले जाकर बाँध दिया। उसे चारा

खूब देने पर बकरी का शरीर पुष्ट नहीं हुआ। जैसे ही शेर दहाड़ता, उसका खाया-पीया हराम हो जाता। यह भय का बंधन है।

बाहरी बंधनों की क्या बात। अपने भीतर इतने बंधन हैं कि उनसे निबटे बिना बाहरी बंधनों से निबटना, नहीं निबटने के समान हो जाता है।

बंधन बंधन को जन्म देता है और मुक्ति मुक्ति को। बाहरी बंधनों से मुक्ति पाने की अनिवार्य शर्त है मानसिक मुक्ति, आंतरिक मुक्ति।

आर्जव

गौतम ने पूछा, 'भंते! आर्जव से मनुष्य क्या प्राप्त करता है?' भगवान् महावीर ने कहा, 'गौतम! आर्जव से मनुष्य काया की ऋजुता, भावों की ऋजुता, भाषा की ऋजुता और संवादी प्रवृत्ति-कथनी और करनी की समानता को प्राप्त करता है।'

आर्जव का अर्थ है सरलता। सरलता वह प्रकाश-पुंज है, जिसे हम चारों ओर देख सकते हैं। भगवान् महावीर ने कहा, 'निर्मलता उसे प्राप्त होती है, जो ऋजु होता है।' कपटी मनुष्य का मन कभी निर्मल नहीं होता। बच्चे का मन सरल होता है, इसलिए उसके प्रति सबका स्नेह होता है। हम जैसे-जैसे बड़े बनते हैं, समझदार बनते हैं, जैसे-वैसे हमारे मन पर आवरण आते रहते हैं। आवरण अज्ञान का होता है। आवरण संदेह का होता है। आवरण माया का होता है। हम दूसरे व्यक्ति को जानने का यत्न नहीं करते, इसलिए हमारा मन उसके प्रति सरल नहीं होता। हम दूसरे व्यक्ति के प्रति विश्वास नहीं करते, इसलिए उसके प्रति हमारा मन सरल नहीं होता। हम दूसरे व्यक्ति से अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं, इसलिए उसके प्रति हमारा मन सरल नहीं होता। यदि इस दुनिया में अज्ञान, संदेह और कपट नहीं होता तो मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम की धारा बहती। मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई दूरी नहीं होती। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से विभक्त नहीं होता। एक संस्कृत-कवि ने कहा है-

'सन्धते सरला सूची, वक्रा छेदाय कर्तरी'-सूई सरल होती है, इसलिए जोड़ती है, दो को एक करती है और कैंची टेढ़ी होती है, इसलिए वह काटती है, एक को दो करती है।

सरलता मनो को साँधती है। माया कैंची का काम करती है, मनो के टुकड़े-टुकड़े कर डालती है।

हम भोले न हों-सामने की स्थिति का प्रतिबिंब लेने की स्वच्छता से वंचित न हों। हम मायावी भी न हों-अपने मन की कलुषता से सामने वाले के मन को कलुषित करने की दक्षता से संपन्न न हों। हम सरल हों-वातावरण के प्रति सजग हों, किंतु दूसरों के प्रति मन में मलिन भाव न हो। जिसका मन सरल होता है, वह दूसरों से ठगा नहीं जाता। ठगा वही जाता है, जिसके अपने मन में मैल होता है।

एक बुढ़िया जा रही थी। सिर पर एक गठरी थी। उसी रास्ते से एक युवक जा रहा था। उसके मन में करुणा का भाव आया। उसने बुढ़िया से कहा, 'दादी, कुछ देर के लिए गठरी मुझे दे दो। तुम्हें थोड़ा-सा विश्राम मिल जाएगा।' बुढ़िया ने उसका भाव देखा और उसे गठरी दे दी। थोड़ी देर बाद बुढ़िया ने गठरी फिर ले ली। युवक का मन बदल गया। उसने सोचा-गठरी मेरे पास थी। उसे लेकर मैं भाग जाता तो बुढ़िया मेरा क्या करती? युवक ने फिर गठरी माँगी। बुढ़िया ने नहीं दी। उसने फिर आग्रह किया तो बुढ़िया ने कहा, 'अब नहीं दूँगी।' उसने पूछा, 'दादी! अब क्यों नहीं देगी?' बुढ़िया बोली-'बेटा! अब नहीं दूँगी। जो तुझे कह गया, वह मुझे भी कह गया।'

सरलता मन का वह प्रकाश है, जिसमें कोई भी वस्तु अस्पष्ट नहीं रही। माया मन का वह अंधकार है, जिसमें आदमी भटकता है और भटकता ही रहता है।

मार्दव

गुलाब के फूल में जो सौंदर्य और सुगंध है, वह हर फूल में नहीं है। यह उत्कर्ष और अपकर्ष प्रकृति का नियम है। जहाँ पहाड़ है, वहाँ चोटी भी है और तलहटी भी है। पहाड़ में विचार-शक्ति नहीं है, इसलिए उसकी चोटी और तलहटी में कोई संघर्ष नहीं है। मनुष्य विचारशील प्राणी है। जो तलहटी पर खड़ा है, वह चोटी वाले को देख हीन-भावना से भर जाता है और जो चोटी पर खड़ा है, वह तलहटी वाले को देखकर अहंकार से भर जाता है।

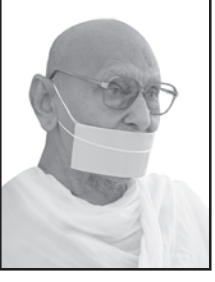
हिंदुस्तान जैसे धार्मिक देश में स्पृश्य और अस्पृश्य-ये दो श्रेणियाँ आज भी चल रही हैं। न जाने कितने लोगों ने अस्पृश्यता के अभिशाप से अभिशप्त होकर धर्म-परिवर्तन किया और कर रहे हैं। जिस वर्ग ने उत्कर्ष प्राप्त किया, उसने दूसरे वर्ग को अपने से निम्न ठहराकर ही संतोष की साँस ली। यह मनुष्य का मद है। मद अधर्म का द्वार है। इसमें प्रवेश पाकर मनुष्य ने सदा दूसरे मनुष्यों के प्रति क्रूर व्यवहार किया है।

भगवान् महावीर से पूछा गया-'भंते! धर्म के द्वार कितने हैं?'

भगवान ने कहा-'धर्म के चार द्वार हैं।'

'कौन-कौन से, भंते?'

भगवान ने कहा-'शान्ति, मुक्ति, ऋजुता और मृदुता।'



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(६५) उपधीनाञ्च भावानां, क्रोधादीनां परिग्रहः।
परित्यक्तो भवेद् यस्य, व्युत्सर्गस्तस्य जायते॥

उपाधि-वस्त्र, पात्र, भक्त-पान तथा क्रोध आदि भावों के परिग्रह के परित्याग को व्युत्सर्ग कहते हैं। व्युत्सर्ग उस व्यक्ति के होता है, जिसके उक्त परिग्रह परित्यक्त होता है।

वस्तुएँ बंधन नहीं होतीं। बंधन है आसक्ति। वस्त्र, पात्र, आहार आदि शारीरिक सहायक सामग्री है। अनासक्त दशा में इनका उपयोग होता है तो ये संयमपोषक बन जाती हैं, अन्यथा शरीरपोषक। शरीरपोषण आत्म-धर्म नहीं है। आत्म-धर्म है संयम। संयम की साधना में रत साधक देहाध्यास का परित्याग कर आत्मोपासना में दृढ़ होता है। व्युत्सर्ग की साधना के बिना देहाध्यास, ममत्व और आकर्षण छूटता नहीं।

(६६) भावनाभाविते चित्ते, ध्यानबीजं प्ररोहति।
संस्काराः परिवर्तन्ते, चिंतनं च विशुद्ध्यति॥

जो चित्त भावना से भावित होता है, उसमें ध्यान का बीज अंकुरित होता है, संस्कारों का परिवर्तन होता है और चित्त विशुद्ध बनता है।

(६७) प्रेक्षया सत्यसंप्रेक्षा, तत्प्राप्तिश्चानुप्रेक्षया।
पुनः पुनस्तदभ्यासाद्, भावना जायते ध्रुवम्॥

प्रेक्षा से सत्य का दर्शन होता है। सत्य की उपलब्धि अनुप्रेक्षा अथवा स्वतःसूचना से होती है। अनुप्रेक्षा का बार-बार किया जाने वाला अभ्यास भावना बन जाता है।

प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा दो शब्द हैं। प्रेक्षा प्रथम है और अनुप्रेक्षा है उसके बाद होने वाली चिंतनधारा। एक में सत्य का स्पर्श होता है और दूसरे में सत्य की पृष्ठभूमि सुदृढ़ होती है। अनुप्रेक्षा का अभ्यास भावना में बदल जाता है। भावना संस्कारों को बदलती है, दृढ़बद्ध मिथ्या धारणा को विखंडित करती है, सत्य के साक्षात्कार में उसकी अहं भूमिका होती है। चित्त को विशुद्ध बनाती है। आज की भावना कल का साकार दर्शन है। यथार्थ की भावना से भावित चित्त यथार्थ का अनुभव करता है।

साधना के क्षेत्र में भावना का महत्वपूर्ण योगदान है। यह सकारात्मक सोच का प्रकृष्टतम रूप है, साधक के आंतरिक ऐश्वर्य के प्रकटन में इसकी भूमिका असंदिग्ध है। इसका अवलंबन प्रायः साधकों के लिए अनिवार्य बन जाता है। जाने-अनजाने इस मार्ग से उन्हें चलना ही होता है।

(६८) अनित्यो नाम संसारः, त्राणाय कोऽपि नो मम।

भवे भ्रमति जीवोऽसौ, एकोऽहं देहतः परः॥

(६९) अपवित्रमिदं गात्रं, कर्माकर्षणयोग्यता।

निरोधः कर्मणां शक्यो, विच्छेदस्तपसा भवेत्॥

(७०) धर्मो हि मुक्तिमार्गोऽस्ति, सुकृता लोकपद्धतिः।

दुर्लभा वर्तते बोधिः, एता द्वादशभावनाः॥ (त्रिभिर्विशेषकम्)

(१) संसार अनित्य है—यह चिंतन अनित्य भावना है। (२) मेरे लिए कोई शरण नहीं है—यह चिंतन अशरण भावना है। (३) यह जीव संसार में भ्रमण करता है—यह चिंतन भव भावना है। (४) 'मैं एक हूँ'—यह चिंतन एकत्व भावना है। (५) 'मैं देह से भिन्न हूँ'—यह चिंतन अन्यत्व भावना है। (६) शरीर अपवित्र है—यह चिंतन अशौच भावना है। (७) आत्मा में कर्मों को आकृष्ट करने की योग्यता है—यह चिंतन आस्रव भावना है। (८) कर्मों का निरोध किया जा सकता है—यह चिंतन तप भावना है। (९) मुक्ति का मार्ग धर्म है—यह चिंतन धर्म भावना है। (१०) लोक पुरुष्कृति वाला है—यह चिंतन लोक भावना है। (११) बोधि दुर्लभ है—यह चिंतन बोधि दुर्लभ भावना है। ये बारह भावनाएँ हैं।

(७१) मैत्री सर्वत्र सौहार्द, प्रमोदो गुणिषु स्फुरेत्।

करुणा कर्मणात्तेषु, माध्यस्थ्यं प्रतिगामिसु॥

(१) सब जीव मेरे सुहृद् हैं—यह चिंतन मैत्री भावना है। (२) गुणी व्यक्तियों के प्रति अनुराग होना प्रमोद भावना है। (३) कर्मों से आर्त बने हुए जीव दुःख से मुक्त बनें—यह चिंतन करुणा भावना है।

(४) प्रतिकूल अथवा विपरीत वृत्ति वाले व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा रखना—यह माध्यस्थ्य भावना है।

(७२) संस्काराः स्थिरतां यान्ति, चित्तं प्रसादमृच्छति।
वर्धते समभावोऽपि, भावनाभिर्ध्रुवं नृणाम्॥

इन भावनाओं से संस्कार स्थिर बनते हैं, चित्त प्रसन्न होता है और समभाव की वृद्धि होती है।

(७३) भावनाभिर्विमूढाभिः, भावितं मूढतां व्रजेत्।
चित्तं ताभिरमूढाभिः, भावितं मुक्तिमर्हति॥

मोहयुक्त भावनाओं से भावित चित्त मूढ बनता है और मोह-रहित भावनाओं से भावित होकर वह मुक्ति को प्राप्त होता है।

(७४) आत्मोपलब्ध्यै जीवानां, भावनालम्बनं महत्।
तेन नित्यं प्रकुर्वीत, भावनाभावितं मनः॥

आत्म-स्वरूप की उपलब्धि के लिए भावना महान् आलंबन है, इसलिए मन को सदा भावनाओं से भावित करना चाहिए।

(७५) भावनायोगशुद्धात्मा, जले नौरिव विद्यते।
नौकेव तीरसंपन्नः, सर्वदुःखाद् विमुच्यते॥

भावनायोग-अनित्य आदि भावनाओं से जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, वह जल में नाव की भाँति होती है। जैसे नाव किनारे पर पहुँचती है, वैसे ही वह दुखों का पार पा जाता है, मुक्त हो जाता है।

(७६) भवेदास्रविणी नौका, न सा पारस्य गामिनी।
या निरास्रविणी नौका, सा तु पारस्य गामिनी॥

जो नाव आस्रविणी है—छेद वाली है, वह समुद्र के पार नहीं पहुँचती और जो निरास्रविणी है—छेद रहित है, वह समुद्र के उस पार चली जाती है।

भावना—भावना का एक अर्थ होता है—वासना या संस्कार। मनुष्य का जीवन अनंत जन्मों की वासना का परिणाम है। व्यक्ति जैसी भावना रखता है वह वैसा ही बन जाता है। मनुष्य जो कुछ कर रहा है—वह सब भावना का पुनरावर्तन है। साधना का अर्थ है—एक नया संकल्प या सत्य की दिशा में अभिनव भावना का अभ्यास, जिससे आत्म-विमुख भावना के मंदिर को तोड़कर आत्माभिमुखी भावना द्वारा नए भवन का निर्माण करना। किंतु यह एक दूसरी अति न हो जाए, जिसमें व्यक्ति अन्य भावना द्वारा पहले की तरह संमोहित हो जाए। इसलिए भावना का दूसरा अर्थ है—जिस भावना से अपने को संस्कारी बना रहे हैं, ध्यान द्वारा उसे प्रत्यक्ष अनुभव करना। यदि केवल संकल्प को दोहराते चले जाएँ तो फिर वह सम्मोहन हो जाएगा। एक टूटेगी, दूसरी निर्मित होगी। किंतु अनुभूति नहीं होगी।

अमेरिका के राष्ट्रपति लिंकन की जन्म-शताब्दी मनाई जाने वाली थी। लिंकन से मिलते-जुलते व्यक्ति को उसकी भूमिका निभाने के लिए चुना गया। उसने वर्ष भर यात्रा की। लिंकन का पार्ट अदा किया। वह संस्कार इतना सघन हो गया कि वह अपने आपको लिंकन समझने लगा। वर्ष पूरा हो गया, किंतु उसका सपना नहीं टूटा। लोगों ने बहुत समझाया कि तुम लिंकन नहीं हो। लेकिन वह किसी तरह इसको स्वीकार करने के लिए राजी नहीं हुआ। कुछ लोगों ने कहा, जैसे लिंकन को गोली मारी वैसे ही इसको भी गोली मार दो। अंततोगत्वा एक मशीन का निर्माण किया गया, जो असल को प्रकट कर सके। अनेक परीक्षण सफल हुए। किंतु वह मशीन पर खड़ा हुआ। उसने सोचा, सब कहते हैं—तू लिंकन नहीं है, कह दूँ और उससे पीछा छुड़ा लूँ। वह बोला—मैं लिंकन नहीं हूँ, किंतु मशीन ने बताया कि तू लिंकन है, वह फेल हो गई। भावना का इतना गहरा असर हुआ कि लिंकन न होते हुए भी लिंकनाभास अवचेतन मन में पेट गया। इसलिए यह अपेक्षित है कि साधक भावना के साथ-साथ सच्चाई के दर्शन से पराङ्मुख न हो। वह ध्यान के अभ्यास के साथ-साथ भावना का अनुशीलन करता रहे।

महावीर ने भावना को नौका कहा है। जैसे नाव से समुद्री यात्रा सानंद संपन्न होती है, वैसे ही भावना रूपी नौका से चित्त को साध्य के अनुरूप सुवासित कर भव-सागर को पार किया जा सकता है। सूफी संतों ने एक सुझाव साधकों को दिया है कि जो भी दिखाई पड़े, उसे परमात्मा मानकर चलना। अनुभव हो तब भी और कल्पना करनी पड़े तब भी। क्योंकि वह कल्पना एक दिन सिद्ध होगी। जिस दिन सिद्ध होगी, उस दिन किसी से क्षमा नहीं माँगनी पड़ेगी। इसमें भावना और अनुभूति—दोनों का स्पष्ट दर्शन है।



युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याणक वर्ष के उपलक्ष्य में

● शासनश्री साध्वी रतनश्री ●

महामहिम श्री महाश्रमण का दीक्षा दिवस मनाते हैं। खुशियों का सागर लहराया आनंदित हो जाते हैं।

सरदारशहर की पुण्य धरा पर जन्म आपने है लिया। गुरु आज्ञा से मुनि सुमेर से संयम पथ स्वीकार किया। ज्ञान ध्यान ला कर विकास आगे बढ़ते जाते हैं।

तुलसी गुरु और महाप्रज्ञ की शिक्षाएँ अपनाई थीं। विनय भाव और समर्पण भाव की ज्योति खूब जगाई थी। अतः आपको युवाचार्य पद दे उल्लासित हो जाते हैं।

४३ दीक्षा एक साथ दे कीर्तिमान बनाया है। तेरापंथ का यश झंडा विश्व में फहराया है। मिला हमें यह संघ विलक्षण मन में मोद मनाते हैं।

देश विदेश की कर यात्रा अणुव्रत संदेश दिया। नागालैंड, नेपाल देश में जाकर खूब प्रचार किया। भूटान देश में जैन ध्वज लहराया गरिमा गाते हैं।

भाग्यशाली हैं हम इस युग में तीर्थकर जैसे गुरु मिले। अमृत महोत्सव का यह अवसर खुशियों के हैं सुमन खिले। संघ चतुर्विध है अति हर्षित संघ की महिमा गाते हैं।

नया वर्ष

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

खुशियों की झोली भर करके, नया वर्ष यह आया है। सपनों को साकार करो तुम, मानव जीवन पाया है।

स्वप्न अधूरे जो छूटे हैं और बंधन जो भी टूटे हैं। अनबन और उलझन के कारण, जो भी हमसे रूठे हैं। सबका मन रखता है फिर भी अपने से शर्मिदा हैं। वास्तव में जो दिल की दौलत, लिए उसी के जिंदा हैं। दिल की बातें तुझे सुनाने, नया संदेश लाया है।

करना यदि विषयान तुझे तो शिवशंकर भी बनना है। बत्तीसी के इस घेरे में, रसना बनकर रहना है। दूर हटेगी सब बाधाएँ, जिनमें हिम्मत होती है। जो जाता है गहराई में, उज्ज्वल मिलते मोती हैं। साहस का सम्मान करो तुम, मानव तन यह पाया है।

मन की ख्वाहिश पूरी करने, नेक भावना सदा रखो। जीवन में आगे बढ़ना तो सोच-समझकर कदम रखो। मंजिल उनको ही मिलती जो जीवन में गतिमान रहे। जग उनकी इज्जत करता जो शांत भाव से कष्ट सहे। रजनी बीती रवि साथ में, नव प्रभात ले आया है।

अरमानों के पंख सुनहरे, मन को सदा लुभाते हैं। जैसे कर्म करेगा प्राणी, वैसे ही फल पाते हैं। पल-पल का विश्लेषण करके आगे बढ़ते रहना है। समय मित्र है सदा तुम्हारा, भला बुरा क्यों कहना है। कालचक्र की महिमा गरिमा, कौन समझने पाया है।

धर्म में रमणीय बने रहें

विजयनगर।

मुनि दीप कुमार जी ने सफल चातुर्मास की संपन्नता के बाद मंगल विहार किया। उससे पूर्व तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी ने प्रदेशी राजा का प्रवचन करते हुए कहा कि जो सुना जाता है, उसका सार है उसको ग्रहण कर जीवन को बदलना। चातुर्मास संपन्न हो गया है, अब प्रस्थान करना है। कथा की मूल बात कहते हुए मुनिश्री ने कहा कि केशी कुमार श्रमण राजा प्रदेशी से आश्वस्त हो गए, वैसे ही हम भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि हमारे प्रस्थान के बाद भी क्या धर्म की क्यारियाँ भवन में, घरों पर इसी तरह हरी-भरी लहलहाती रहेंगी? इस अवसर पर यही प्रेरणा है, सभी सदा धर्म में रमणीय बने रहें, नित्य धर्म की आराधना करते रहें।

मुनिश्री ने तेरापंथ भवन से विहार किया। अच्छी संख्या में भाई-बहन जुलूस के रूप में चले। मुनिश्री ने कहा कि विहारचर्या प्रशस्त और कल्याणकारी है। साधु तो रमता भला। गुरु आज्ञा से विहार किया है। आज मुनि काव्य कुमार जी का दीक्षा दिवस है, इनके ज्ञातिजनों के यहाँ आए हैं।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि गुरु कृपा से मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में चातुर्मास किया। आज ज्ञातिजनों के यहाँ दीक्षा दिवस पर आना हो गया। गुरु इंगित और मुनिश्री के अनुसार निरंतर आध्यात्मिक रूप से बढ़ता रहूँ।

बाबेल परिवार ने सबका स्वागत किया। स्वागत कार्यक्रम में पारिवारिकजनों से अक्षरा, सुनीता, अनीश ने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरणा, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु गादिया, विकास बांठिया, अरविंद मांडोत, अमित दक, ममता बैद आदि ने विचार व्यक्त किए।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह



महिला मंडल के विविध आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा की अध्यक्षता में स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी द्वारा मंगलपाठ सुनकर कार्यक्रम की शुरुआत की। नवयुवती बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि स्नेह मिलन कार्यक्रम को तीन चरण में आयोजित किया जाएगा। प्रथम वेशभूषा प्रतियोगिता, दूसरा मिलेट्स के बने व्यंजन प्रतियोगिता और तीसरा 'कैसे युवतियाँ कर सकती हैं मंडल को और रोशन' विषय पर बहनों के सुझाव प्रतियोगिता। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि बहनों ने तीनों कार्यक्रम में अच्छा उत्साह दिखाया। वेशभूषा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पूर्व मंत्री ममता मेहता, दूसरे स्थान पर अभयमति डोसी और तीसरे स्थान पर उपाध्यक्ष

जयश्री सालेचा व सहमंत्री डिंपल सालेचा रही।

मिलेट्स व्यंजन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जयश्री सालेचा, दूसरा स्थान डिंपल सालेचा व काजल बोकड़िया तथा तीसरा स्थान ललिता सालेचा व नीतू सालेचा ने प्राप्त किया। सभी बहनों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में नवयुवती बहनों ने अपने सुझाव देते हुए कहा कि हर बहन खुद के लिए समय बिताना चाहिए। खुद का आध्यात्मिक व सामाजिक विकास करना चाहिए। इसके लिए मंडल ही सबसे अच्छा प्लेटफॉर्म है।

निकिता बागरेचा ने बताया कि सारिका भंसाली, कुनिका बाघमार, प्रियंका मेहता आदि ने निर्णायक की भूमिका निभाई। पूर्व मंत्री ममता मेहता ने सभी बहनों का आभार ज्ञापन किया।

माँ का दिशा बोध बेटी की उड़ान

मदुरै।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा 'माँ का दिशा बोध बेटी की उड़ान' कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। महिला मंडल की

बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्षा लता कोठारी ने उपस्थित सभी बहनों एवं कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में ६ माँ-बेटी की जोड़ियों ने भाग लिया। सभी ने अपने-अपने ढंग से अलग-अलग प्रकार से अपने भावों की प्रस्तुति दी। माँ-बेटी का रिश्ता दुनिया में सबसे अनमोल रिश्ता है। दुनिया में बच्चे के लिए सर्वप्रथम माँ गुरु होती है और वहाँ से ही संस्कारों का सिलसिला शुरू हो जाता है। अगर एक माँ अपनी बेटी को

सही दिशा की ओर ले जाती है तो बेटी निश्चित ही ऊँची उड़ान भरती है। कन्या मंडल प्रभारी दीपिका फूलफगर ने संचालन और निर्णायक की भूमिका निभाई।

माँ-बेटी की बांडिंग को गेम्स के माध्यम से परखा गया, जिसमें भावना और मधु पारख प्रथम स्थान, वर्षा और वृद्धि गिया, लता और कश्मी कोठारी द्वितीय स्थान, सोना और लाव्य चोपड़ा, संगीता और मुस्कान सुराणा तृतीय स्थान पर रही। सभी जोड़ियों को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। साथ में सभी प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन बबीता लोढ़ा ने किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

राजाजीनगर।

विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में मानव सेवा के अंतर्गत तेयुप द्वारा कुमारा पार्क स्थित 'मातृश्री मनोविकास केंद्र' में सेवा कार्य संपादित किया गया। केंद्र में लगभग ५० बच्चे, जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग सदस्य प्रवासित हैं। संस्थापक संयोजक बसवराज ने केंद्र की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि २२ वर्षों से गतिमान यह केंद्र जिसमें छोटे बच्चे ८ महीने से लेकर बड़े २० वर्ष तक के बच्चे प्रवासित हैं। परिषद द्वारा सभी सदस्यों को टी-शर्ट प्रदान किए गए। बसवराज ने परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप, राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने अपने विचार व्यक्त करते हुए केंद्र के प्रति अपनी मंगलकामना व्यक्त की। इस अवसर पर अरविंद कोठारी, जयंतिलाल गांधी, सुनील मेहता, राजेश देरासरिया एवं किशोर मंडल संयोजक दीपक कटारिया, सह-संयोजक दर्शन पोरवाड़ एवं भुवन कटारिया की उपस्थिति रही।

किशोरों का फंक्शन - किशोर जंक्शन

सांताक्रुज।

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता मुंबई के नंदनवन में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर मुंबई के विभिन्न उपनगरों को अपनी चरणरज से पावन करते हुए सांताक्रुज पधारे। आचार्यप्रवर के चार दिवसीय प्रवास के दौरान तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा मुंबई स्तरीय किशोर मंडल के लिए 'किशोरों का फंक्शन-किशोर जंक्शन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रेलवे थीम पर आधारित यह कार्यक्रम पाँच सत्र में विभाजित था।

प्रथम सत्र—'विसडम एक्सप्रेस' का सफर करवाया गया जिसमें बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि दिनेश कुमार जी व अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी का वक्तव्य किशोरों में उत्साह भरने वाला था। मुनिश्री ने ज्ञान और ज्ञान की भेद रेखा को समझाते हुए हमारे संस्कारों को सुरक्षित रखने की प्रेरणा प्रदान की। तेरापंथ दर्शन की बहुत सरल व सहज भाषा में प्रेरणा पाकर किशोरों के संस्कार पुष्ट बनें।

द्वितीय सत्र— 'क्यूरोसिटी सुपरफास्ट' के माध्यम से किशोरों द्वारा

बाल मुनि अर्हम कुमार जी व मुनि रत्नेश कुमार जी से अनेक रोचक व ज्ञानवर्धक जिज्ञासाएँ प्रश्नों के माध्यम से की गई, जिनके उत्तर पाकर किशोरों को आत्म संतुष्टि हुई, साथ ही साथ मुनि मेधावी कुमार जी से भी किशोरों का परिचय हुआ जो दीक्षा से पूर्व दिल्ली किशोर मंडल के संयोजक रहे हैं।

तृतीय सत्र—'मस्ती की पाठशाला' जिसमें विभिन्न किशोर मंडल से आए किशोर साथियों को अलग-अलग आठ समूहों में विभाजित कर अनेक टास्क दिए गए। इसके माध्यम से किशोरों ने आपस में एक-दूसरे से परिचय कर उत्साह के साथ सभी टास्क को पूर्ण करने का प्रयास किया। सभी ने मनोरंजन के साथ अपने बुद्धि कौशल के द्वारा ज्ञान प्राप्ति का प्रयास किया।

चतुर्थ सत्र—सबसे ज्यादा ऊर्जा प्रदान करने वाला था क्योंकि सभी किशोरों के चरण पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में गतिमान हो रहे थे। पूज्यप्रवर की सेवा उपासना और प्रेरणा पाथेय पाकर किशोरों ने अपने भीतर नए उत्साह का अनुभव किया। पूज्य गुरुदेव ने नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा के साथ-साथ नमस्कार महामंत्र का स्मरण करने, संस्कारों को

सुरक्षित रखने की महत्त्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान की।

पंचम सत्र—अंतिम सत्र में सम्मान, विजेता टीम को पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम के विशेष आमंत्रित मोटिवेशनल स्पीकर शांतिलाल गोलछा का प्रभावी वक्तव्य रहा, जिससे सभी किशोर सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गए। पूरे कार्यक्रम में तेरापंथ किशोर मंडल सांताक्रुज के सदस्यों का श्रम परिलक्षित हो रहा था। अभातेयुप के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश सोनी, सहमंत्री भूपेश कोठारी, सदस्य नीरज आच्छा, महेश परमार आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में स्वागत भाषण तेरापंथ किशोर मंडल सांताक्रुज संयोजक गगन गेलड़ा ने व आभार सह-संयोजक अर्चित भालावत ने किया। मुनिश्री का परिचय तेरापंथ किशोर मंडल सदस्य शुभम परमार, शुभम गोखरू, प्रवर परमार, विदित धाकड़ आदि ने किया। कार्यक्रम में तेयुप सांताक्रुज से तेरापंथ किशोर मंडल प्रभारी अनिल चपलोट व दिलीप बाफना के साथ हर ईकाई का भरपूर सहयोग रहा, जिससे यह कार्य सफलतम बन सका। कार्यक्रम का संचालन रोहित चपलोट ने किया।

धर्म की कमाई है

कल्याणकारी : आचार्यश्री महाश्रमण



दादर, १४ दिसंबर, २०२३

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर बांद्रा ईस्ट से दादर पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी चिंतन रखने वाला प्राणी होता है, जिसके पास मति, श्रुत की शक्ति होती है। सबका चिंतन एक समान न भी हो, कई अविकसित भी हो सकते हैं फिर भी सामान्यतया मनुष्य में विचारशक्ति होती है।

बुद्धिमान व्यक्ति ऐसे कार्य को करना स्वीकार नहीं करेगा, जहाँ लाभ कम नुकसान ज्यादा होता हो।

इस बात को धर्म के संदर्भ में समझें कि ठगी करने से पैसा ज्यादा आ भी गया पर पाप कर्म का बंध हो गया। दूसरी तरफ आपने किसी को धोखा दिया है, तो वह भी आपके साथ धोखा कर सकता है। ठगी करने वाले के व्यवहार में विश्वसनीयता भी नहीं रहती है।

ठगी से आत्मा मलिन होती है। ईमानदारी से आत्मा निर्मल रहती है। पैसा यहीं रह जाने वाला है, किसी के साथ एक नया पैसा भी जाने वाला नहीं है। धर्म की कमाई कोई कभी नहीं छीन सकता है। हमें मानव जीवन मिला है, इसमें ज्यादा से ज्यादा धर्म-अध्यात्म की कमाई करने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन की आवश्यकताएँ व्यापार-नौकरी हो सकती हैं, पर ये मूल हमारा साध्य नहीं है। हमारा मूल साध्य है कि आत्मा का कल्याण कैसे हो। जीवनशैली पर थोड़ा ध्यान दें, दिनचर्या के प्रथम चरण में एक सामायिक सुबह-सुबह हो जाए। धार्मिक साधना में कुछ समय अवश्य लगाने का प्रयास करना चाहिए। जिंदगी में धर्म की कमाई करें, यह कल्याणकारी हो सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में तीर्थ यात्रा का अपना महत्त्व होता है। तेरापंथ धर्मसंघ में गुरुदर्शन ही तीर्थयात्रा है। गुरुदर्शन करने का चिंतन करने से ही फल मिलने लग जाता है। उपवास से लेकर मासिक तपस्या का फल मिल सकता है। हमें परम पूज्य के दर्शन का लाभ मिल रहा है, जो हमें अपनी मंजिल तक ले जाने वाला होगा।

पूज्यप्रवर ने स्कूल के विद्यार्थियों को ड्रस सेवन से मुक्त रहने का संकल्प करवाया। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्वागताध्यक्ष नवरत्नमल कोठारी, तेममं, सभाध्यक्ष गणपत मारू ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। दो चरणों में आयोजित मंगलभावना कार्यक्रम में अनेकों वक्ताओं ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति ऋषि प्रधान एवं कृषि प्रधान रही है। कृषि परंपरा से शरीर संपोषित होता है एवं ऋषि परंपरा आत्मा को संपोषित करती है। आत्मा को संपोषित करने वाले साधु-संत चातुर्मास में एक स्थान पर रहकर अपनी साधना-आराधना करते हुए जनकल्याण के लिए भी अपने समय, श्रम व शक्ति का नियोजन करते हैं।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ने हमें शाहदरा क्षेत्र प्रदान किया। साध्वी अणिमाश्री जी ने

एक महाश्रमण मॉल खोला वहाँ मॉल बड़ा जबरदस्त चला। इसलिए मुझे लगता है यह चातुर्मास ऐतिहासिक एवं सफलतम रहा।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि चातुर्मास में साध्वीश्री जी ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की, उसमें सभी अभिस्नात होकर आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हमने चातुर्मासिक प्रवेश रेणू दुधोड़िया के पखवाड़े के साथ किया और आज स्नेहलता सेठिया के चवदह एवं रेखा आंचलिया व चेतन बैद के अठाई तप के प्रत्याख्यान के साथ विहार कर रहे हैं। पाँच महीने तक तपस्या की झड़ी लगी रही।

भारत सरकार के वैज्ञानिक मंत्रालय की सलाहकार डॉ० कुसुम लुनिया,

अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, महासभा के आंचलिक प्रभारी मन्नालाल बैद, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, निवर्तमान अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, तेममं पूर्वी दिल्ली की उपाध्यक्ष मंगला कुंडलिया, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष विकास चोरड़िया आदि अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजों ने साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावनाएँ अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुरेश सेठिया ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

डॉ० धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल ५ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता से उपाध्यक्ष-द्वितीय नीरज बैंगानी ने इस शिविर में सहभागिता दर्ज कराई।



मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य बनाए मानव : आचार्यश्री महाश्रमण

कालबादेवी, १७ दिसंबर, २०२३

अणुव्रत यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः कालबादेवी स्थित आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि भवन पधारे। मुम्बादेवी पार्किंग कम्पाउंड में बने महाप्रज्ञ महाश्रमण समवसरण में परम पूज्यश्री ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हम मनुष्य हैं और मनुष्य होना बहुत बड़ी बात होती है। ८४ लाख जीव योनियों में यह मानव जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस मानव जीवन को प्राप्त करना विकास की भूमि को प्राप्त करना होता है।

जीवन तो सभी प्राणी जीते हैं। जीवन जीने का कोई लक्ष्य होना चाहिए। जैन आगमों में बताया गया है कि पूर्व कर्म का क्षय करने के लिए इस देह को धारण करें। आध्यात्मिक दर्शन में मोक्ष की बात आती है। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए अध्यात्म की साधना की अपेक्षा रहती है। साधुपन ग्रहण करना भी मोक्ष प्राप्ति का एक मार्ग है। गृहस्थ भी मोक्ष प्राप्ति की साधना कर सकता है।

हम शरीर का पोषण करें और कर्मों का शोषण करें। गृहस्थ जीवन में धर्म की



साधना करें। साधु के तो पाँच महाव्रत बताए गए हैं। गृहस्थों को अणुव्रतों की साधना करनी चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से जैन-अजैन सभी का जीवन अच्छा हो सकता है।

आज शिक्षा संस्थान बहुत उपयोगी हैं, जो ज्ञान विकास में अच्छी भूमिका निभाते हैं। इन शिक्षा संस्थानों में ज्ञान के

साथ अच्छे संस्कार भी दिए जाएँ। विद्यार्थियों का भावनात्मक विकास भी हो। हमारे जीवन में ज्ञान और आचार का अच्छा विकास हो, तो अच्छा व्यक्तित्व उसे माना जा सकता है।

हमारा मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य बने। भले इस जन्म में मोक्ष संभव नहीं है, पर मोक्ष की दूरी तो कम की जा सकती है।

हमें अहिंसा, संयम, तप और व्रतों की आराधना करने का प्रयास करना चाहिए। हम तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़ें आचार्य भिक्षु के अनुयायी हैं। प्रभु के मार्ग पर हमारा जीवन समर्पित रहे और हम उस मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

आज साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा

जी का जन्म दिवस है। साध्वीप्रमुखाश्री खूब स्वस्थ रहें, अच्छी सेवा करती रहें। अनेक गणमान्य व्यक्तित्व भी आज पधारे हैं। राजनीति में भी अच्छा काम होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि इस दुनिया में सबसे दुर्लभ है—मनुष्य जन्म का प्राप्त होना है। वह हमें प्राप्त है, इसका हम अच्छा लाभ उठाएँ। हम पूर्व कर्मों का क्षय करें। उसके लिए हम रत्नत्रयी की आराधना करें। हमें सब दुःखों से छुटकारा पाना है। पूज्यप्रवर ने आज जन्म दिवस पर आशीर्वचन फरमाया है। मैं निरंतर धर्मसंघ की सेवा करती रहूँ। पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त जिम्मेदारी को बखुबी निभाती रहूँ।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में क्षेत्रीय सभाध्यक्ष गणपत डागलिया, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

महाराष्ट्र विधानसभा स्पीकर राहुल नावेंकर, कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा ने भी अपनी श्रद्धा भक्ति अभिव्यक्ति की।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

